भगवती तारा की दुर्लभ साधना विधि

महान योगीराज परम पूज्य स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज ने अपना सारा समय तारा साधना और उसके विविध प्रयोग प्राप्त करने में ही लगाया है , एक प्रकार से देखा जाय तो तंत्र के माध्यम से तारा सिद्ध करने के जो लुप्त प्रयोग योगीराज जी ने प्राप्त कर साधकों को स्पष्ट किये हैं, वे अपने आप में अन्यतम हैं । यह दुर्लभ साधना विधि भी उनके द्वारा ही हमें प्राप्त हुई है ।

तारा साधना महाविद्या तो है ही, पर तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से वर्णित है, कि तारा सिद्ध करने पर साधक को नित्य प्रातः उठने पर उसके सिरहाने दो तोला स्वर्ण स्वतः प्राप्त हो जाता है, जो कि भगवती तारा की कृपा के फलस्वरूप साधक को प्राप्त होता है ।

नीचे दिया हुआ, प्रयोग "नाथवासर" क्रम से है । इस क्रम में तांत्रिक विधि के अनुसार प्रकाशा, विमर्शना, आनन्दा, ज्ञाना, सत्या, पूर्णा, स्वभावा, प्रतिभा, और सुभगा, के क्रम से साधना सम्पन्न होती है, जो कि अपने आप में सर्वथा गोपनीय और महत्वपूर्ण है ।

तारा जयन्ती के अवसर पर यह दुर्लभ साधना प्रयोग पत्रिका पाठकों को समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है ।

यों तो भगवती तारा की साधना नवरात्रि में या महीने की किसी भी अष्टमी से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु तारा जयन्ती के अवसर पर यदि इस दुर्लभ साधना प्रयोग को सम्पन्न किया जाय तो साधक के लिए यह अपने आपमें ही महत्वपूर्ण चिन्तन है ।

यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती हुई भी परम गोपनीय, दुर्लभ और महत्वपूर्ण है । कम पढ़ा लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है । न तो यह साधना पेचीदी है और न इसमें जटिल विधि विधान ही है, इसके बावजूद भी यह साधना तुरन्त फलप्रद एवं शीघ्र सिद्धि दायक है । हमने स्वयं यह अनुभव किया है, कि स्वामी जी की बताई हुई विधि से यदि इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो अद्वितीय सिद्धि प्राप्त होती है.

और ऐसी साधना सम्पन्न करने वाला सामान्य और गरीब व्यक्ति भी सिद्धि प्राप्त होने के बाद लाखों करोड़ों में खेलने लगता है, यही नहीं अपितु इसके अलावा भी कई प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती है जिसके फलस्वरूप वह पूर्ण सफलता प्राप्त कर जीवन में धन, वैभव सुख, सौभाग्य और अद्वितीय सिद्धियां प्राप्त करने में समर्थ सफल हो पाता है।

मेरी राय में जब हमें इतना उच्चकोटि का और अचूक तांत्रोक्त प्रयोग प्राप्त हुआ है, तो हमें इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह जिस दिन भी इस साधना को सम्पन्न करना चाहे, वह चाहे दीपावली का दिन हो, या तारा जयन्ती का अवसर हो, अथवा किसी भी महीने की अष्टमी हो, साधक प्रातःकाल उठकर स्नान कर यह निश्चय कर ले, कि मैं आज पूर्ण रूप से तारा साधना सम्पन्न करूंगा और भगवती तारा को सिद्ध कर जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करूंगा जिसका अभाव मैं अनुभव कर रहा हूं। यही नहीं अपितु इस तारा साधना के द्वारा मैं अपनी जन्म जन्म की दरिद्रता समाप्त कर सर्वथा ऋण मुक्त हो कर पूर्ण वैभव युक्त जीवन व्यतीत करूंगा।

साधक इस दिन एक समय भोजन करे, भोजन में भी वह सात्विक आहार ले, और ब्रह्मचर्य का पालन करे। यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, और इसमें चार घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता।

तारा यंत्र

यों तो तारा यंत्र कई ग्रन्थों में स्पष्ट किया हुआ है, परन्तु स्वामीजी के अनुसार इस प्रकार के यंत्रों पर तारा सिद्ध सरलता से सम्पन्न नहीं हो पाती। यदि नाथवासर क्रम से तारा यंत्र का निर्माण हो और भूपुर चक्र के द्वारा उसका निर्माण हो, फिर त्रिवृत के अनुसार उसका अंकन कर षोडश दल का निर्माण करे, और चतुर्दशार रूप से यंत्र निर्माण कर अष्टार चक्र में भगवती तारा को स्थापित करे।

वास्तव में ही इस प्रकार की विधि से निर्मित यंत्र सामान्य यंत्र नहीं होता, अपितु सही शब्दों में कहा जाय तो ऐसा यंत्र 'यंत्रराज' कहलाता है। ऐसे यंत्र के दर्शन भी अपने आपमें दुर्लभ है। जिसके घर में ऐसा यंत्र स्थापित होता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है। वास्तव में ही इस प्रकार से यंत्र का निर्माण और उसका स्थापन अपने आप में ही महत्वपूर्ण है।

ऐसा यंत्र सोने पर, चांदी पर या ताम्र पत्र पर अंकित कर उसमें समस्त त्रिपुर सुन्दरी सहित ३६० शक्तियों का आह्वान करें, और पूर्ण मंत्र सिद्ध कर उसे प्रभाव युक्त बनावे। ऐसा ही यंत्र साधना में उपयुक्त रहता है, और ऐसे ही यंत्र के द्वारा इस प्रकार की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

जिस दिन साधना सम्पन्न करनी हो, उस दिन साधक पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने लाल रेशमी वस्त्र किसी लकड़ी के बाजोट पर बिछा दे और उस पर पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर कर इस यंत्र राज को स्थापित कर दे।

साधना रहस्य

साधक लाल धोती या गुलाबी धोती पहिन कर बैठे और लाल आसन ही बिछा दे। इसके बाद एक अलग पात्र या थाली को दूसरे बाजोट पर रख कर उसके मध्य में कुंकुम से 'श्री तारायै नमः' लिखकर उस पर इस यंत्र को स्थापित कर दें और फिर जल मिश्रित दूध से धीरे धीरे जल चढ़ाता हुआ, यंत्र को स्नान करावे। दूध

मिश्रित जल चढाते समय निम्न महादेवियों का उच्चारण करे और प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ नमः जोड़ ले।

१- नित्यायै नमः २- जगन्मूर्त्यै, ३- देव्यै, ४- भगवत्यै, ५- महा-भार्यायै ६- प्रसन्नायै, ७- वरदायै, ८- मुक्ति-दायिन्यै, ९- परमायै, १०- हेतु-भूतायै, ११- हरि-नेत्र-कृतालयायै, १२- विश्वेश्वर्यै, १३- जगद्-धात्र्यै १४- स्थिति कारिण्यै, १५- संहार कारिण्यै, १६- निद्रायै १७- भगवत्यै, १८- अतुलायै, १९- तेजसां निध्ये, २०- स्वाहायै, २१- स्वधायै, २२- वषट्-कारायै, २३- स्वरात्मने, २४- सुधायै, २५- अक्षरायै, २६- त्रिधा-मात्रात्मिकायै, २७- अर्ध-मात्रायै (अर्ध-मात्रा-त्मिकायै), २८- स्वर-स्वरूपिण्यै, २९- अनुच्चार्यायै, सन्ध्यायै, ३०- सावित्र्यै, ३१, जनन्यै, ३२- परायै, ३३- सृष्टि-रूपायै, ३४- जगद्-योन्यै ३५-दिव्यायै, ३६-कार्यै,३७-सिद्धये, ३८-वृद्धये, ३९-दिव्यायै, ४०-वर प्रदायै।

इसके बाद साधक उस यंत्र को अलग ले कर भली प्रकार से शुद्ध वस्त्र से पोंछ ले और दूसरे किसी पात्र के मध्य में "ह्रीं" अक्षर अष्ट गन्ध से लिख कर उस पर इस यंत्र को स्थापित करे और फिर पूर्ण श्रद्धा के साथ अष्ट गन्ध से ही इस यंत्र पर निम्न नामों के साथ "नमः" शब्द लगा कर चालीस बिन्दियां अष्ट गन्ध से लगावे। प्रत्येक बिन्दी लगाते समय निम्न एक नाम का उच्चारण करते हुए ये चालीस बिन्दियां लगावे।

१- इन्दु रूपिण्यै, २- सुखायै, ३- कल्याण्यै, ४- ऋद्ध्यै, ५- सिद्ध्यै, ६- कूर्मिकायै, ७- नैऋत्यै, ८- भूभृतां लक्ष्म्यै (भूभृद्-लक्ष्म्यै), ९- शर्वाण्यै, १०- दुर्गायै ११- दुर्ग-पारायै, १२- सारायै, १३- सर्व-कारिण्यै, १४- क्षान्त्यै (ख्यात्यै), १५- कृत्स्नायै, १६- धूम्रायै १७- अति-सौम्यायै, १८- अति-रौद्रिण्यै, १९- जगत्-प्रतिष्ठायै २०- कृष्णायै (कृत्स्नायै), २१- विष्णुमायायै, २२- चैतनायै, २३- बुद्धि रूपायै, २४- निद्रा-रूपायै, २५- क्षुधा-रूपायै, २६- ज्ञानारूपायै, २७- शक्तिरूपायै, २८- तृष्णा-रूपायै, २९- क्षान्ति-रूपायै, ३०- जाति-रूपायै, ३१- लज्जा, रूपायै, ३२- शान्ति रूपायै, ३३- श्रद्धा-रूपायै, ३४- कान्ति-स्वरूपिण्यै (कान्ति-रूपायै), ३५- लक्ष्मी-रूपायै, ३६- वृत्ति-रूपायै, ३७- धृति-रूपायै, ३८- स्मृति-रूपायै, ३९- दया रूपायै, ४०- सृष्टि-रूपायै।

अष्ट गन्ध से चालीस बिन्दियां लगाने और इन चालीस महाशक्तियों का पूजन करने के बाद यंत्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे और धूप या अगरबत्ती प्रज्वलित करें।

फिर यंत्र पर पुष्प समर्पित करे, और पुष्प माला पहिनाये, साथ ही यन्त्र के सामने घर पर बनाया हुआ प्रसाद समर्पित करे। प्रत्येक नाम के आगे साधक 'नमः' शब्द को जोड़ कर पुष्प समर्पित करे, इसमें किसी भी प्रकार के पुष्पों का प्रयोग किया जा सकता है।

१- बीज-एवरूपिण्यै, २- सम्मोहिन्यै, ३- विद्यायै, ४- स्वर्ग-प्रदायिन्यै. ५- मुक्ति-प्रदायिन्यै, ६- अशेष-जन-हृत्-संस्थायै, ७- नारायण्यै, ८- शिवायै, ९- कला-काष्ठादि-रूपायै, १०- परिणामप्रदायिन्यै, ११- सर्व-मंगल-मांगल्यै, १२- शिवायै, १३- सर्वार्थ-साधिकायै, १४- शरण्यायै, १५- त्र्यम्बिकायै, १६- गौयै, १७- सृष्टयात्मिकायै। १८- स्थित्यात्मिकायै, १९- लयात्मि-त्कायै, २०- शक्त्यै, २१- सनातन्यै, २२- गुणाश्रयायै २३- गुणमयायै, २४- नारायण-स्वरूपिण्यै, २५- शरणागत-परित्राण-परायणायै, २६- दीन-परित्राण-परायणायै, २७- आर्त-परित्राण-परायणायै, २८- सर्वस्यार्ति-हरायै, २९- देव्यै, ३०- विष्णु-रूपायै, ३१- परात्परायै, ३२- हंस-युक्त-विमानस्थायै, ३३- ब्रह्माणी-रूप-धारिण्यै, ३४- कोशाम्भी-धारिण्यै, ३५-क्षुरिका-धारिण्यै, ३६-शूलधारिण्यै, ३७- चन्द्र-धारिण्यै, ३८- अहि-धारिण्यै, ३९- वर-धारिण्यै, ४०- महा-वृषम-संरूढायै।

इस प्रकार पुष्प समर्पण करने के बाद साधक उसी आसन पर बैठे बैठे तारा के परम गोपनीय मंत्र की

सोलह माला मंत्र जाप करे।

तारा माला

स्वामी जी के अनुसार इस प्रकार की साधना में विशेष १०८ मनकों से सज्जित तारा माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, जिसका प्रत्येक मनका मन्त्र सिद्ध हो, इन मनकों में आठ मनके अष्ट सिद्धि मन्त्रों से, नौ मनके नव निधि सिद्धियों से और ९१ मनके देव सिद्धि मन्त्र से आपूरित हो, इस प्रकार प्रत्येक मनका एक विशेष सिद्धि से आपूरित होता है, इसलिए इस प्रकार की माला अत्यन्त सौभाग्यदायक और शीघ्र सिद्धि प्रदायक मानी गई है।

इस माला की सबसे पहले साधक पूजा करे, सुमेरु पर केसर का तिलक करें, और बाद में प्रत्येक मनके पर केसर का तिलक कर उन पर अक्षत और पुष्प समर्पित करें, तत्पश्चात् हाथ में जल ले कर साधक उच्चारण करे, कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक तारा सिद्धि के लिए मन्त्र जप संपन्न कर रहा हूं, और यह साधना मैं भगवती तारा को प्रसन्न करने के लिए तथा जीवन में स्वर्ण, भोग, वैभव एवं सौभाग्य प्राप्त करने के लिए सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल किसी पात्र में छोड़ दें।

इसके बाद साधक तारा माला से निम्न मन्त्र की सोलह माला मन्त्र जाप वहीं बैठे बैठे सम्पन्न करें।

तारा मन्त्र

॥ ऐं ओं ह्रीं क्रीं हूं फट् ॥

उपरोक्त मन्त्र का जाप पूरी आस्था और विश्वास के साथ सम्पन्न करें, मन्त्र जप करते समय साधक की दृष्टि सामने रखे हुए यन्त्र के मध्य में होनी चाहिए।

मंत्र जप पूरा होने के बाद यदि स्मरण हो तो तारा की अथवा भगवती लक्ष्मी की आरती सम्पन्न करें, और घर के सदस्यों को प्रसाद वितरित करें, इसके बाद किसी कुंवारी कन्या को अथवा किसी ब्राह्मण को भोजन संपन्न करावे, और उसे यथोचित दान-दक्षिणा दे कर इस साधना की संपन्नता अनुभव करें, ऐसा करने पर यह साधना सम्पन्न होती है।

वास्तव में ही यह गोपनीय साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और यह साधना करने से साधक की समस्त कामनाएं पूर्ण होती है, वह इस लोक में सभी भोगों को प्राप्त कर अन्त में देवी की सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है। 卐

तारा की नौ कलाएं

तारा साधना सम्पन्न करने पर भगवती लक्ष्मी से सम्बन्धित निम्न नौ सिद्धियां या नौ कलाएं स्वतः साधक के साथ हो जाती है।

१. विभूति– विभूति का तात्पर्य निरन्तर उन्नति और गरीबों की सहायता करने का गुण स्वतः ही साधक के जीवन में आ जाता है।
२. नम्रता– ऐसी साधना करने पर यह गुण स्वतः ही आ जाने से व्यक्ति की प्रशंसा होने लगती है।
३. कान्ति– इससे साधक के चेहरे पर भव्यता और प्रभाव उत्पन्न हो जाता है।
४. तुष्टि– ऐसा साधक कभी भी अपुत्रवान नहीं रहता और पूर्ण पारिवारिक सुख मिलता है।
५. कीर्ति– तारा सिद्ध करने वाले की कीर्ति चारों ओर फैलने लगती है।
६. सिद्धि– इससे साधक कई विभिन्न साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करता है।
७. पुष्टि– ऐसा साधक सभी दृष्टियों से पुष्ट, स्वस्थ व उन्नतिप्रद बना रहता है।
८. सृष्टि– तारा सिद्ध करने पर साधक नवीन सिद्धियों को जन्म देने वाला बन जाता है।
९. ऋद्धि– साधना पूर्ण होने पर उसके घर में सभी प्रकार से उन्नति होने लगती है, और वह पूर्ण रूप से विद्वान, धनवान और कीर्तिवान बन जाता है।